Name of the Subjet	**:**	**Sociology**
Title of the Paper	**:**	**Social Research: Case Study Method, Questionnaire, Schedule, Interview** (सामाजिक अनुसंधान : वैयक्तिक अध्ययन पद्धति, प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार)
Name of the Teacher	**:**	**Dr. Mihir Kumar Jha** **Associate Professor & Head,** **Department of Sociology** **V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani**

B.A. Sociology (Hon's)

Part- 1, Paper – 4

सामाजिक अनुसंधान : वैयक्तिक अध्ययन पद्धति, प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार

(Social Research: Case Study Method, Questionnaire, Schedule, Interview)

प्रश्न – 1 : वैयक्तिक अध्ययन पद्धति क्या है? इसकी विशेषताएँ एवं स्रोत को स्पष्ट करें?

प्रश्न – 2 : वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का महत्त्व एवं सीमाओं को स्पष्ट करें।

प्रश्न – 3 : प्रश्नावली तथा उसके प्रकारों का उल्लेख करें।

प्रश्न – 4 : अनुसूची क्या है?

प्रश्न – 5 : साक्षात्कार एवं इसके प्रकारों को स्पष्ट करें।

प्रश्न – 6 : साक्षात्कार प्रविधि का महत्त्व एवं सीमाओं को स्पष्ट करें।

प्रश्न – 1 : वैयक्तिक अध्ययन पद्धति क्या है? इसकी विशेषताएँ एवं स्रोत को स्पष्ट करें?

जब किसी एक इकाई का संपूर्णता में अध्ययन होता है तो अध्ययन करने की इस पद्धति को वैयक्तिक अध्ययन पद्धति कहते है। इसमें किसी एक व्यक्ति या इकाई का विश्लेषण विस्तृत उपागम द्वारा होता है। सामाजिक अनुसंधान नए तथ्यों के अन्वेशण से संबंधित है। इसक अंतर्गत पुराने तथ्यों का सत्यापन होता है। कार्य–कारण संबंधों की व्याख्या की जाती है। घटनाओं की क्रमबद्धता का विश्लेषण किया जाता है। दो या दो से अकि घटनाओं के बीच मौजूद संबंधों को स्पष्ट किया जाता है। घटनाओं को प्रभावित तथा नियंत्रित करने वाले स्वाभाविक नियमों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार सामाजिक अनुसंधान में जटिल सामाजिक प्रघटनाओं तथा मानव व्यवहारों के संबंध में विश्वसनीय तथा प्रामाणिक निष्कर्ष प्रस्तुत करने हेतु वैयक्तिक पद्धति का उपयोग किया जाता है। विशेष रूप में जटिल व्याधिकीय एवं बहुआयामी घटनाओं में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का उपयोग अत्यंत अपेक्षित है। भारत में **प्रमिला कपूर** ने विवाह, परिवार, दांपत्य जीवन, यौन संबंध तथा भूमिका–संघर्ष के अध्ययन में वैयक्ति अध्ययन पद्धति का उपयोग किया है। यदि फिल्म में श्रेष्ठ नायिकाओं के जीवन के यथार्थ का अध्ययन अपेक्षित हो तो वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के आधार पर अध्ययन किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप ऐश्वर्या राय, सुष्मिता सेन अथवा बिपाशा बसु का अध्ययन अभिप्रेत हो तो इन नायिकाओं के जीवन के विविध पक्षों, ग्रंथियों तथा जटिलताओं का संपूर्णता में अध्ययन अपेक्षित होगा।

उल्लेखनीय है कि वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का उपयोग फ्रांस, अमेरिका तथा इंग्लैंड में विशेष रूप से किया जाता रहा है। 1890 से 1935 तक अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के अंतर्गत समाजशास्त्र अनुसंधानों में इस पद्धति का विशेष रूप से उपयोग किया गया। **फ्रिडरिक लीप्ले**

ने समाज विज्ञानों में वैयक्तिक अध्ययन विधि की शुरुआत की। वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के आधार पर **हरबर्ट स्पेन्सर** ने भी अनेक महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों का प्रतिपादन किया। वस्तुतः यह एक गुणात्मक पद्धति है तथा सामाजिक जीवन के यथार्थ की जटिलताओं के विश्लेषण में सूनिश्चित रूप में सहायक है।

आर0के0 मर्टन ने वैयक्तिक अध्ययन पद्धति की अवधारणा का विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया है–

1. आर0 के0 मर्टन के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन पद्धति आनुभविक अनुसंधान विधि (Emirical Study Method) के रूप में स्वीकृत है। वस्तुतः वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का उपयोग क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान होता है। अपराधी महिलाओं, वेश्याओं राजनीतिक अभिजनों, कामकाजी महिलाओं, जेल के कैदियों तथा तलाक से संबंधित जटिलताओं के आनुभविक अध्ययन में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का उपयोग अपेक्षित होता है।
2. आर0 के0 मर्टन ने यह भी स्पष्ट किया है कि वैयक्तिक अध्ययन पद्धति वास्तविक जीवन के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार मर्टन के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन पद्धति जिंदगी की तल्ख सच्चाइयों के अध्ययन तथा विश्लेषण से संबंधित है। उन्होंने दो बिंदुओं का भी स्पष्टीकरण किया है–*(i)* समकालीन *(ii)* वास्तविक जीवन।

   इस प्रकार वैयक्तिक अध्ययन पद्धति समकालीन घटनाओं तथा मानव व्यवहारों के अध्ययन से संबंधित है। साथ ही इसमें वास्तविक जीवन के संदर्भ में संपूर्णता में अध्ययन होता है।
3. मर्टन के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के आधार पर जटिल सामाजिक यथार्थ की परत–दर–परत छिपी हुई सच्चाई को स्पष्ट किया जा सकता है।

एम0 ई0 वाटसन के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन पद्धति किसी इकाई के विशेष पहलू अथवा उसके संपूर्ण क्षेत्र से संबंधित है। इसमें घटना तथा घटना से संबंधित परिवेश अथवा व्यक्ति तथा व्यक्ति से संबंधित सभी पहलुओं का अध्ययन होता है। एम0ई0 वाटसन ने यह भी स्पष्ट किया है कि वैयक्तिक अध्ययन पदधति के अंतर्गत सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में सामाजिक अंतः संबंधों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार जब किसी व्यक्ति का अध्ययन होता है, तो उसकी जाति, उपजाति, धर्म, बिरादरी, विचारधारा, परिवेश तथा सामाजिक अंतःसंबंधों के आयामों का भी अध्ययन होता है।

4. **बिसेंज** तथा **बिसेंज** के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन पद्धति गुणात्मक विश्लेषण का एक स्वरूप है जिसमें एक व्यक्ति, एक परिस्थिति या संस्था का सतर्कतापूर्ण संपूर्ण पक्षों का अध्ययन होता है।[1]

एच0पी0 यंग ने अपनी पुस्तक 'Fact, Findings with Rural People' में स्पष्ट किया है कि वैयक्तिक अध्ययन पद्धति किसी व्यक्ति के सूक्ष्म, गहन एवं संपूर्ण अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि अन्वेषणकर्ता अपनी समस्त क्षमताओं एवं पद्धतियों का प्रयोग करता है। साथ ही यह किसी व्यक्ति के संबंधों में पर्याप्त सूचनाओं का संकलन व्यवस्थित रूप में करता है। वैयक्तिक अध्ययन पद्धति में अनुसंधानकर्ता यह पता लगाने का प्रयास करता है कि क्या एक इकाई के रूप में कोई व्यक्ति समाज में किस तरह कार्य करता है।

पी0वी0 यंग ने अत्यंत स्पष्ट रूप में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति को परिभाषित किया है। पी0वी0 यंग के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन–पद्धति एक

---

1. "The case study is a formof qualitative analysis involving the very careful as completed observation of a person, a situation or an institutions." *-Biesanz and Biesanz; Modern Society*

इकाई के अध्ययन से संबंधित है। इकाई एक व्यक्ति हो सकता है, एक परिवार हो सकता है। इकाई के रूप में एक संस्था का अध्ययन संभव है। इसी तरह सांस्कृतिक समूह को भी इकाई के रूप में अध्ययन के लिए उपयोग किया जा सकता है। संपूर्ण समुदाय भी वैयक्तिक अध्ययन के लिए एक इकाई है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि वैयक्तिक अध्ययन एक विधि है जिसके अंतर्गत सामाजिक इकाई का विश्लेषण तथा व्याख्या की जाती है।[2]

विवरणों तथा विश्लेषणों के आधार पर स्पष्ट होता है कि वैयक्तिक अध्ययन एक गुणात्मक विधि है। इसमें सामाजिक जीवन की एक इकाई की संपूर्ण जानकारी प्राप्त की जाती है। सामाजिक जीवन की यह इकाई कोई व्यक्ति भी हो सकता है या परिवार, संस्था, समूह संस्कृति और यहाँ तक कि इसके अंतर्गत सांस्कृतिक संदर्भों सामाजिक अंतः संबंधों तथा संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक पक्षों का अध्ययन किया जाता है। **आर0 के0 यिन** ने वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के निम्नलिखित तीन प्रकारों का उल्लेख किया है–

1. **अन्वेषणात्मक**–अन्वेषणात्मक अध्ययन वे होते है। जो अनुसंधान से पहले किए जाते है।
2. **व्याख्यात्मक**–व्याख्यात्मक अध्ययन कार्य–कारण अनुसंधानों में प्रयुक्त किए जाते है।
3. **विवरणात्मक**–विवरणात्मक अध्ययनों में अनुसंधान प्रारंभ करने के पहले एक विवरणात्मक सिद्धांत की रूपरेखा को प्रस्तुत किया जाता है।

स्टेक ने भी वैयक्तिक अध्ययन के तीन प्रकार का उल्लेख किया है–

---

2. "Case study is a method of exploring and analyzing the life of a social unit, be that unit a person, a family, an institutions, a cultural group or even entire community." *-P.V. Young; Scientific Social Surveys and Research, p.229*

1. **आंतरिक**–जब अभिरुचि के आधार पर अनुसंधानकर्ता किसी इकाई के अध्ययन से संबंधित होता है तो उसे आंतरिक वैयक्तिक अध्ययन के रूप में रेखांकित किया जाता है।
2. **साधन के रूप में सहायक –** जब अध्ययनकर्ता परत–दर–परत छिपी हुई जानकारी को प्राप्त करने का प्रयास करता है तो इस प्रकार के अध्ययन का साधन के रूप में उपयोग होता है।
3. **सामूहिकता –** जब व्यापक पैमाने पर वैयक्तिक अध्ययन का उपयोग होता है तो उसे सामूहिकता पर आधारितक वैयक्तिक अध्ययन कहते हैं।

वैयक्तिक अध्ययन विधि की विशेषताएँ (Characteristics of Case Study Method)

1. **गुणात्मक अध्ययन –** वैयक्तिक अध्ययन पद्धति की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि यह एक गुणात्मक पद्धति है। जिस प्रकार एक डॉक्टर एक मरीज का अध्ययन एक्स–रे, अल्ट्रासाउंड, स्कैनिंग तथा अन्य व्याधिकीय परीक्षणों के आधार पर करता है ठीक उसी तरह एक समाजशास्त्री वैयक्तिक अध्ययन पद्धति में एक इकाई का अध्ययन करता है। परंतु इस इकाई का गहन अध्ययन करता है। गुणात्मक अध्ययन करता है। जाहिर है कि वैयक्तिक अध्ययन पद्धति संख्यात्मक अध्ययन पद्धति नहीं है।
2. **संपूर्ण अध्ययन –** वैयक्तिक अध्ययन पद्धति सामाजिक इकाई के संपूर्ण अन्वेषण एवं विश्लेषण से संबंधित है। **गुडे** और **हॉट** ने भी स्पष्ट किया है कि यह ऐसी विधि है जो किसी इकाई को संपूर्णता में देखती है।
3. **गहन अध्ययन –** सुनिश्चित रूप में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति गहन अध्ययन एवं विश्लेषण से संबंधित है। इसमें सूक्ष्म तथ्यों का भी अध्ययन किया जाता है। इसी तरह **बर्गेस** ने इस विधि को सामाजिक सूक्ष्मदर्शी यंत्र के रूप में रेखांकित किया है।

4. **अध्ययन की एक विशिष्ट इकाई–** वैयकितक अध्ययन पद्धति में किसी एक विशिष्ट इकाई का अध्ययन किया जाता है। **पी0वी0 यंग** के अनुसार यह इकाई कोई व्यक्ति, परिवार, समूह, संस्था अथवा समुदाय हो सकता है।
5. **कारकों का अध्ययन –** वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के आधार पर कार्य–कारण संबंधों की व्याख्या की जाती है तथा कारकों के बीच मौजूद परस्पर संबंधों का विश्लेषण किया जाता है।
6. **संपूर्ण पद्धतियों का प्रयोग –** संपूर्ण तथा गहन अध्ययन के लिए वैयक्तिक अध्ययन विधि में आवश्यकतानुसार उपलब्ध सभी पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। **गुडे** और **हॉट** के अनुसार, *''विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक तथ्यों को प्राप्त करने में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के अंतर्गत अध्ययनकर्ता संगठन के द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली प्रविधियों एवं साधनों, जैसे–गहन साक्षात्कार, प्रश्नावली, आत्म–इतिहास, प्रलेख अन्य व्यक्तियों के द्वारा व्यक्तिगत अध्ययन, पत्र आदि का प्रयोग कर सकता है।''*[3]

वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के स्रोत (Sources of Case Study Method)

वैयक्तिक अध्ययन पद्धति में तथ्यों तथा सूचनाओं के संकलन हेतु प्राथमिक तथा द्वैतीयक स्रोतों का उपयोग किया जाता है।

प्राथमिक स्रोत–इकाई के संबंध में जानकारी प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित प्राथमिक स्रोतों का उपयोग किया जाता है–

1. साक्षात्कार
2. अनुसूची
3. साक्षात्कार निर्देशिका

---

3. "In order to obtain historic data one any may use all techniques which any other mode of organization uses intensive interview, questionnaire, self histories, documents, case reported by others, letters etc." *-Goode and Hatt; Methods in Social Research*

4. प्रश्नावली
5. अवलोकन
6. अवलोकन अनुसूची
7. कैमरा
8. डिजिटल कैमरा
9. डिजिटल मोबाइल
10. टेप
11. ऑडियो–विडियो तकनीक

उपर्युक्त तकनीकों के आधार पर इकाइयों का गहन अध्ययन किया जाता है। वस्तुतः प्राथमिक स्त्रोतों के माध्यम से प्रामाणित तथा वस्तुनिष्ठा सूचनाओं एवं आधार सामग्रियों का संकलन किया जाता है।

द्वैतीयक स्रोत–वैयक्तिक अध्ययन पद्धति में द्वितीयक स्रोत के रूप में साधारणतः निम्नलिखित तकनीकों का उपयोग होता है–

1. डायरी (Diaries)
2. पत्र (Letters)
3. जीवन इतिहास (Life History)
4. प्रलेख (Documents)

वैयक्तिक अध्ययन पद्धति में द्वैतीयक स्रोतों का विशेष महत्त्व है। **जॉन मैडगे** ने स्पष्ट किया है कि इकाई के संपूर्ण अध्ययन हेतु वैयक्तिक अध्ययन पद्धति में संबंधित व्यक्तियों का जीवन इतिहास महत्त्वपूर्ण द्वैतीयक स्रोत सिद्ध होता है। इसी तरह प्रलेख (Documents) का भी विशेष महत्त्व है। **ऑलपोर्ट** के अनुसार व्यक्तिगत प्रलेख के आधार पर प्रामाणिक तथा प्रत्यक्ष सूचनाओं का संकलन किया जा सकता है।

प्रश्न – 2 : वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का महत्त्व एवं सीमाओं को स्पष्ट करें।

वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का महत्त्व (Importance of case Study Method)

गॉफमैन के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन विधि समाजविज्ञान की एक मात्र गहन एवं विश्वसनीय विधि है। इसके अंतर्गत सूक्ष्म अध्ययन संभव है। **सी0एच0 कूले** के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन विधि के आधार पर प्रत्यक्ष अध्ययन संभव होता है। इस विधि के आधार पर अंतर्दृष्टि प्राप्त हेाती है। साथ ही इसके आधार पर बोध–ज्ञान (Perception) का विकास होता है।[4]

गुडे और **हॉट** ने भी स्पष्ट किया है कि वैयक्तिक अध्ययन विधि के आधार पर अंतदृष्टि प्राप्त होती है। गहराईपूर्ण अध्ययन संभव है। अतः इस विधि के आधार पर नए अनुसंधानों के लिए उपकल्पनाओं के निरूपण में सहयोग प्राप्त होता है। उपकल्पनाओं के निरूपण के लिए यह लाभदायक है।[5]

वैयक्तिक अध्ययन में इकाइयों का संपूर्ण अध्ययन होता है। इसके आधार पर सामान्यीकरण किया जा सकता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में भी यह सहायक है। वस्तुतः वैयक्तिक अध्ययन विधि प्रामाणिक तथा विश्वसनीय अध्ययन हेतु एक महत्त्वपूर्ण विधि है। इसमें गंभीरपूर्वक संबंधित सभी पक्षों का गहन अध्ययन किया जाता है।

वैयक्तिक अध्ययन विधि की सीमाएँ (Limitations of case Study Method)

लुंडबर्ग ने स्पष्ट किया है कि वैयक्तिक अध्ययन विधि अपने–आप में कोई वैज्ञानिकों विधि नहीं है बल्कि वैज्ञानिक अनुसंधान का आरंभिक चरण है। इस प्रकार लुंडबर्ग ने वैयक्तिक अध्ययन विधि की सीमाओं का उल्लेख किया है। **रीड**

---

4. "Case study deepens our perception and gives us a cleaner insight into life…it gets at behaviour directly and not by an indirect approach." *–C.H. Cooley; Quoted by P.V. Young; Scientific Social Surveys and Research, p.229*
5. "…it is often true that the depth of insight, afforded by the case-study will yield fruitful hypotheses for a later full-scale study." *-Goode and Hatt; op., cit., p.338*

बेन ने भी इस पद्धति को नैतिकता रहित बताया है। साथ ही, उनके अनुसार यह विधि पूर्णतः व्यावहारिक नहीं है। अनुभवों के आधार पर स्पष्ट होता है कि इस विधि के उपयोग में अधिक समय, धैर्य तथा साधन की अपेक्षा होती है। साधारणतः इस विधि में निदर्शन का अभाव होता है। इस विधि में डायरी प्रलेख तथा पत्र आदि का भी उल्लेख होता है। अतः वस्तुनिष्ठ निष्कर्षों को प्राप्त करने में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती है। इस विधि के अंतर्गत अनुसंधानकर्ता को इकाई का संपूर्णता में अध्ययन करना होता है। अध्ययन के दौरान जटिल प्रघटनाओं तथा परिस्थितियों का अनुसंधानकर्मी को सामना करना होता है। फलतः उसे अनेक अवसरों पर विभिन्न प्रकार के संवेगों से जूझना पड़ता है। अनेक तरह की समस्याओं से भी एक अनुसंधानकर्मी की मुठभेड़ हो सकती है। इस प्रकार वह विभिन्न प्रकार की उलझनों एवं समस्याओं से घिर सकता है। इसका परिणाम अनुसंधान के लिए नुकसानदेह सिद्ध हो सकता है। निष्पक्ष तथा विश्वसनीय निष्कर्षों को प्राप्त करने में भी कठिनाई उत्पन्न होती है। इस प्रकार वैयक्तिक अध्ययन विधि खतरे से खाली नहीं है।। यह सीमाओं में बँधी हुई है।

सीमाओं के बावजूद मानव जीवन के रहस्यो, समस्याओं एवं जटिलताओं के अध्ययन में वैयक्तिक अध्ययन विधि के महत्त्व को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। विद्युत भी खतरे से खाली नहीं है। आग भी भयानक होती है। बावजूद इसके सावधानी तथा सतर्कता के साथ विद्युत एवं आग का उपयोग होता है। अतः राह पर चलने से पहले जिस तरह मुसाफिर राह की पहचान कर लेता है, राह की समस्याओं की जानकारी प्राप्त कर लेता है, ठीक उसी तरह वैयक्तिक अध्ययन विधि में एक अनुसंधानकर्मी धैर्य, संयम, समर्पण एंव निष्ठा के साथ तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण करता है। यदि सही वैयक्तिक अध्ययन विधि का उपयोग हो तो अध्ययन के निष्कर्षों में चार चाँद लगाए जा सकते है।

प्रश्न – 3 : प्रश्नावली तथा उसके प्रकारों का उल्लेख करें।

प्रश्नावली प्रश्नों की एक व्यवस्थित तालिका होती है। प्रश्नावली का हर प्रश्न अध्ययन विषय के केंद्रीय बिंदु के साथ तर्कपूर्ण रूप से जुड़ा होता है। साधारणतः प्रश्नावली छपी होती है। प्रश्नावली को डाक के द्वारा अथवा किसी प्रतिनिधि के द्वारा उत्तरदाताओं के पास भेजने की व्यवस्था की जाती है। वर्तमान दौर में ई–मेल का भी सहारा लिया जा सकता है। साथ ही आवश्यकता पड़ने पर प्रश्नावली को फैक्स के द्वारा उत्तरदाता के पास प्रेषित किया जा सकता है। चूँकि प्रश्नावली को डाक के द्वारा उत्तरदाता के पास भेजने की व्यवस्था की जाती है, अतः उत्तरदाता स्वयं प्रश्नों को भली– भाँति समझ कर उत्तर लिखता है। इस प्रकार उत्तर लिखने के समय प्रश्नकर्ता स्वयं मौजूद नहीं होता। उत्तरदाता प्रश्नावली के उत्तरों को लिखकर डाक अथवा सुनिश्चित प्रतिनिधि अथवा ई–मेल आदि के द्वारा प्रश्नकर्ता को लौटा देता है। चूँकि इसमें उत्तर लिखने का काम स्वयं उत्तरदाता का होता है अतः इस विधि के आधार पर अधिक शिक्षित एवं समझदार उत्तरदाताओं से ही प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। साधारण शिक्षित अथवा अशिक्षित उत्तरदाताओं से प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना संभव नहीं है। चूँकि इस विधि के आधार पर मात्र अधिक शिक्षित उत्तरदाताओं से ही तथ्यों का संकलन संभव है अतः इसके अंतर्गत सभी प्रकार के उत्तरदाताओं को सम्मिलित नहीं किया जा सकता है।

प्रश्नावली विधि में एक अनिवार्य शर्त है कि उत्तरदाताओं के पास एक अनुग्रह पत्र भी प्रेषित किया जाए। अनुग्रह पत्र स्पष्ट, तर्कपूर्ण सारगर्भित एवं संक्षिप्त होना चाहिए। अनुग्रह पत्र में उत्तरदाताओं से प्रश्नों के उत्तर देने हेतु निवेदन किया जाता है। उनके सहयोग की प्रत्याशा में उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाता है। अध्ययन के महत्त्व को स्पष्ट किया जाता है। साथ ही अध्ययन में उनका सहयोग किन अर्थों में अपेक्षित है, इसका भी खुलासा किया जाता है।

गुडे और **हॉट** के अनुसार साधारणतः प्रश्नावली शब्द का अभिप्राय प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की एक प्रविधि से है, जिसमें एक पत्र का प्रयोग किया जाता है जिसे उत्तरदाता स्वयं ही भरता है।[6]

जे0डी0 पोप के अनुसार एक प्रश्नावली को प्रश्नों की तालिकाओं के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। सूचनादाता को बिना किसी सहायता के उत्तर देना होता है। इस विधि में अनुसंधानकर्ता स्वयं उत्तरदाता के समख मौजूद नहीं होता है।[7]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट होता है कि प्रश्नावली तथ्य–संकलन की एक विधि है। यह प्रश्नों की एक तालिका है। प्रश्नावली के साथ एक अनुग्रह–पत्र संलग्न होता है। इसमें उत्तरदाता स्वयं उत्तर लिखकर प्रश्नावली को लौटता है। इस विधि के आधार पर बौद्धिक चेतना, जटिल आर्थिक संरचना तथा प्रशासनिक मसलों का अध्ययन किया जाता है। स्पष्ट है इस विधि के आधार पर अधिक शिक्षित जनसमूहों से ही उत्तर प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्नावली के प्रकार (Types of Questionnaire)

जटिल तथा व्यस्त जिंदगी की धड़कनों की सच्चाई को जानने के लिए अधिक शिक्षित उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के आधार पर तथ्यों का संकलन किया जाता है। सीमित समय तथा सीमित साधन में इस विधि का उपयोग संभव है। साथ ही दूर–दराज के क्षेत्रों में बिखरे हुए उत्तरदाताओं का अध्ययन भी इस विधि के आधार पर संभव होता है। प्रश्नावली के विभिन्न प्रकारों का वर्णन निम्नांकित रूप में किया जा सकता है–

---

6. "In general, the word questionnaire refers to a device for securing answers to questions by using a form which the respondent fills in his self." *-Goode and Hatt; Methods in Social Research, p.133*
7. "A Questionnaire may be defined as a set of questions to be answered by the in dormant without the personal aid of an investigator or enumerator." *–J.D. Pope; Research Methods and Procedure in Agriculture and Economics, p.63*

1. स्तरीय प्रश्नावली
2. बंद प्रश्नावली
3. खुली प्रश्नावली
4. तथ्य संबंधी प्रश्नावली
5. मत एवं मनोवृत्ति संबंधित प्रश्नावली
6. मिश्रित प्रश्नावली

स्तरीय प्रश्नावली वह होती है जिसमें कि निश्चित, स्पष्ट तर्कपूर्ण ठोस तथा पूर्व निर्धारित प्रश्नों के अतिरिक्त ऐसे आवश्यक सीमित प्रश्न भी रहते है। जो अपर्याप्त उत्तरों का स्पष्टीकरण करने या अधिक विस्तृत उत्तर प्राप्त करने हेतु अपेक्षित होते है। इस प्रकार स्पष्ट एवं सुनियोजित प्रश्नों की संरचना के आधार पर स्तरीय प्रश्नावली को स्वरूप प्रदान किया जाता है। स्तरीय प्रश्नावली में स्तरीय प्रश्नों को संरचित किया जाता है। साधारणतः स्तरीय प्रश्नावली में वैकल्पिक उत्तरों को भी प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरणस्वरूप एक प्रश्न को प्रस्तुत किया जा सकता है–

वेश्यावृत्ति के संबंध में आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

1. समाज के लिए अभिशाप है।
2. इसे कानून वैधानिक कर देना चाहिए।
3. वेश्यावृत्ति का उन्मूलन संभव नहीं है।
4. वेश्यावृत्ति से जुड़े लोगों को दंडित करना चाहिए।

उत्तरदाताओं को सही उत्तर के कोष्ठक में (√) सही चिह्न लगाने का संकेत दिया जाता है। इस प्रकार उत्तरदाताओं को अपने उत्तरों को स्पष्ट करने में सहूलियत होती है।

खुली प्रश्नावली वे होती है। जिनमें उत्तरदाताओं को विशेष स्वतंत्रता प्राप्त होती है। साधारणतः खुली प्रश्नावली में वैकल्पिक उत्तरों को प्रस्तुत नहीं किया जाता है। उदाहरणस्वरूप एक प्रश्न को प्रस्तुत किया जा सकता है –

आपकी कौन–सी इच्छा है जिसकी पूर्ति अभी तक संभव नहीं हुई है?

इस प्रकार उत्तरदाताओं को प्रश्नों के उत्तर देने हेतु आजादी प्रदान की गई है। कोई विकल्प नहीं प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन की दृष्टि से खुली प्रश्नावली का विशेष महत्त्व है। इसके आधार पर अनेक प्रकार के अज्ञात तथ्यों का खुलासा हो सकता है।

बंद प्रश्नावली में उत्तर सीमा में बँधे होते है।। बंद प्रश्नावली में साधारणतः हाँ/नहीं, सहमत/असहमत आदि वैकल्पिक उत्तरों को प्रस्तुत कर उत्तरदाताओं की स्वतंत्रता एक तरह से सीमित कर दी जाती है।

अनुसंधानकर्ता की क्षमता, साधन, समय तथा परिस्थिति के अनुरूप प्रश्नावली में प्रश्नों का चयन किया जाता है। अधिक क्षमता तथा साधन होने पर स्तरीय प्रश्नावली का उपयोग होता है। साथ ही अवसर के अनुरूप खुली प्रश्नावली एवं बंद प्रश्नावली का उपयोग होता है।

प्रश्न – 4 : अनुसूची क्या है?

अनुसूची तथ्य संकलन की एक विधि है। यह प्रश्नों की एक व्यवस्थित तालिका है। **गुडे** और **हॉट** के अनुसार अनुसूची का हर प्रश्न अध्ययन विषय के केंद्रीय बिंदु के साथ तर्कपूर्ण रूप में जुड़ा होता है। अनुसूची का उपयोग साधारणतः साक्षात्कार के दौरान किया जाता है। इस विधि में साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाता से अनुसूची के आधार पर प्रश्न करता है तथा प्राप्त उत्तर को लिखने का काम स्वयं साक्षात्कारकर्ता का होता है। चूँकि इस विधि में उत्तर लिखने का

काम स्वयं साक्षात्कारकर्ता का होता है अतः उसे उत्तर प्राप्त करते समय उत्तरदाता के समक्ष मौजूद होना पड़ता है। इस प्रकार अनुसूची विधि के उपयोग में उत्तरदाता तथा साक्षात्कारदाता के बीच आमने–सामने का संबंध होता है। चूँकि इसमें प्राप्त उत्तरों को लिखने का काम स्वयं साक्षात्कारकर्ता का होता है अतः इस विधि के आधार पर समाज के सभी तब के लोगों के तथ्यों का संकलन संभव है। अनुसूची के आधार पर तथ्यों के संकलन के क्रम में साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाताओं के साथ रैपर्ट (Rapport) स्थापित करता है। रैपर्ट एक मनोवैज्ञानिक तकनीक है। इसके आधार पर साक्षातकारकर्ता उत्तरदाताओं के साथ अपने पन का संबंध विकसित करता है।। वह उत्तरदाताओं के विश्वास को प्राप्त करने में सफल होने का प्रयास करता है।

गुडे और **हॉट** के अनुसार अनुसूची प्रश्नों की एक तालिका है। इसका उपयोग साक्षात्कार के दौरान किया जाता है। इसमें साक्षात्कारकर्ता तथा उत्तरदाता के बीच आमने–सामने का संबंध होना अपेक्षित है। इस विधि में साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाता से अनुसूची के आधार पर प्रश्न पूछना है तथा उत्तरों को स्वयं लिखता है।

विकासशील देशों में समाजशास्त्रीय अध्ययनों में अनुसूची का विशेष महत्त्व है। इसमें सभी तब के लोगों से तथ्यों का संकलन संभव है। सभी प्रकार के निदर्शन से अनुसूची के आधार पर तथ्यों का संकलन किया जा सकता है।

प्रश्न – 5 : साक्षात्कार एवं इसके प्रकारों को स्पष्ट करें।

मानव समाज के विविध आयामों एवं सामाजिक प्रघटनाओं के अध्ययन में क्षेत्रीय अध्ययन (Field Study) का विशेष महत्त्व है। एक अनुसंधानकर्ता प्रयोगशाला में बैठकर सामाजिक वास्तविकताओं का अध्ययन नहीं कर सकता। सामाजिक अनुसंधान में नए तथ्यों के अन्वेषण के लिए अनुसंधानकर्ता को दूर–सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होता है। जंगल और पर्वतों से गुजरना होता है।

आदिम जनजातियों के दरवाजे पर दस्तक देना होता है। गरीबों की चौपाल पर बैठना होता है। अस्पताल, जेल, मलिन बस्ती रेलवे स्टेशन फुटपाथ गली का नुक्कड़ तथा शहर का चौराहा समाजशास्त्री के लिए वास्तविक प्रयोगशाला है। वह गरीबों के दरवाजे पर दस्तक देता है और पूछता है–आपका नाम क्या है? आपके कितने बच्चे है? आपके बच्चे पढ़ते है? आपका व्यवसाय क्या है? वह गाँव के एक खेतिहर मजदूर की झोंपड़ी में बैठकर पूछता है– अपको न्यूनतम कितनी मजदूरी मिलती है। आपके बच्चे क्या करते है आप वोट देने जाते हैं? वह स्कूल में जाता है और बच्चों से पूछता है आप भविष्य में क्या बनना चहता है। आप भविष्य में क्या बनना चाहते हैं? क्या आप एक प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहते है। क्या आप एक वैाानिक बनना चाहते है वह जोखिम उठाता है और वेश्यालय जाता है। वह वेश्या से पूछता है क्या तुम अपने–आप को बदलना चाहती हो क्या तुम इस अँधेरे से निकलना चाहती हो?

प्रश्नों का सिलसिला कभी खत्म नहीं होता है। मनुष्य जीवन के रहस्यों से जुड़े हजारों सवालों को लेकर एक दुर्खाइम, एक मॉर्गन, एक मैलीनॉस्की, एक रैडक्लिफ ब्राउन, एक एम0एन0 श्रीनिवास लोगों के दिल को टटोलते रहे है। लोगों से प्रश्न पूछते रहे है। उन्हे जवाब चाहिए। प्रश्नों का जवाब चाहिए। प्रश्नों के आधार पर उत्तर प्राप्त करने की इसी पद्धति को साक्षात्कार कहते है। **ऑलपोर्ट** के अनुसार, *''यदि यह जानना चाहते है कि लोग क्या महसूस करते है। क्या अनुभव रखते हैं और क्या याद रखते है। उनकी भावनाएँ एवं उनके उद्देश्य क्या हैं, तो उनसे स्वयं क्यों नहीं पूछते?''*

साक्षात्कार में आमने–सामने बैठकर आधार सामग्री एकत्रित किया जाता है। तथ्य संकलन की एक प्रमुख तकनीक के रूप में साक्षात्कार का उपयोग होता है। साक्षारणतः एक व्यक्ति अथवा समूह के साथ विशिष्ट उद्देश्य के

आधार पर औपचारिक अथवा अनौपचारिक वार्तालाप की प्रक्रिया साक्षात्कार विधि कहलाती है।

सिन–पाओ यंग के अनुसार साक्षात्कार क्षेत्रीय अध्ययन की एक प्रविधि है। साक्षात्कार में उत्तरदाता के कथनों को अंकित किया जाता है। साक्षात्कार में व्यक्ति अथवा व्यक्तियों से संपर्क किया जाता है। उनके व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। साक्षात्कार के आधार पर सामाजिक या सामूहिक अंतःक्रिया के वास्तविक परिणामों को स्पष्ट किया जाता है।

सी0ए0 मोजर के अनुसार साक्षात्कार एक वार्तालाप है। साक्षात्कार साक्षात्कारदाता से वार्तालाप के आधार पर तथ्यों का संकलन करता है। वार्तालाप सुनिश्चित उद्देश्यों के आधार पर होता है।

गुडे तथा **हॉट** के अनुसार साक्षात्कार मूलतः सामाजिक अंतःक्रिया की एक प्रक्रिया है।

साक्षात्कार की अवधारणा को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर रेखांकित किया जा सकता है–

1. साक्षात्कार तथ्य संकलन की एक व्यवस्थित पद्धति है। सुनिश्चित उपकल्पना, व्यवस्थित उद्देश्य, स्पष्ट मुद्दा तथा तर्कपूर्ण सवालों के साथ साक्षात्कार पद्धति का सुनिश्चित संबंध होता है।
2. साक्षात्कार एक प्रक्रिया है। अतः साक्षात्कार में दो पक्षों का होना अपरिहार्य है। दो या दो से अधिक पक्ष भी हो सकते है। परंतु दो पक्षों के बिना साक्षात्कार संभव नहीं है। एक पक्ष साक्षात्कारदाता का होता है, दूसरा पक्ष साक्षात्कारकर्ता का होता है।
3. चूँकि साक्षात्कार एक प्रक्रिया है, अतः दो पक्षों के बीच में अंतःक्रिया का होना अपरिहार्य है। साक्षात्कार में साक्षात्कारदाता तथा उत्तरदाता के बीच

अंतःक्रिया की स्थिति उत्पन्न होती है। अंतःक्रिया का मुख्य आधार सवाल तथा जवाब होता है। साक्षात्कारकर्ता प्रश्न पूछता है तथा साक्षात्कारदाता जवाब देता है।

4. साक्षात्कार एक प्रक्रिया है। यह अंतःक्रिया पर आधारित है। प्रश्नों के आधार पर साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कारदाता को झकझोरता है। अतः साक्षात्कार के समय साक्षात्कारकर्ता की शारीरिक उपस्थिति अपरिहार्य है। अर्थात् साक्षात्कार के समय साक्षात्कारदाता के समक्ष साक्षात्कारकर्ता की उपस्थिति अनिवार्य है।
5. चूँकि साक्षात्कार के समय साक्षात्कारदाता के समक्ष साक्षात्कारकर्त्ता की उपस्थिति अपरिहार्य है, अतः साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता तथा साक्षात्कारदाता के बीच आमने–सामने का संबंध होता है।
6. साक्षात्कार के साथ वातावरण तथा परिवेश जुडा होता है। एक भारतीय प्रशासनिक अधिकारी के कार्यालय में बैठकर यदि साक्षात्कार के द्वारा कोई तथ्यों का संकलन करता है, अधिकारी से साक्षात्कार के आधार पर सूचनाओं को एकत्रित करता है तो उस कार्यालय का परिवेश तथा वातावरण एक विशिष्ट स्वरूप से संबंधित दिखाई पड़ता है। इसके विपरीत यदि मलिन बस्ती में एक निर्धन मजदूर से उसकी झोपड़पट्टी में बैठकर साक्षात्कार के द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाता है तो उसका परिवेश तथा वातावरण 'निर्धनता की संस्कृति' के अनुरूप दिखाई पड़ता है। इस प्रकार साक्षात्कार में साक्षात्कारदाता तथा उसका परिवेश, साक्षात्कारदाता तथा उसका वातावरण, साक्षात्कारदाता तथा उसका संघर्ष आदि परिदृश्यों पर भी ध्यान केन्द्रित करना होता है।
7. साक्षात्कार एक मनोवैज्ञानिक तकनीक है। इस प्रविधि के अंतर्गत साक्षात्कारदाता के मन के गोपनीय रहस्यों को प्रश्न के सहारे प्राप्त करने

का प्रयास किया जाता है। उत्तरदाता के अंतःस्तल को झकझोरना पड़ता है। साधारणतः साक्षात्कारकर्त्ता के लिए उत्तरदाता अपरिचित होता है। संशय, द्वंद्व, शंका तथा अपरिचय के बीच साक्षात्कारदाता सहज रूप में अपने मन के दरवाजे को खोलने के लिए तैयार नहीं होता है। अतः साक्षात्कार संपर्क (Rapport) से संबंधित है। साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कारदाता से संबंध (Rapport) स्थापित करने का प्रयास करता है, आत्मीयता स्थापित करना चाहता है, विश्वास के वातावरण को पैदा करना चाहता है। इस प्रकार संबंध (Rapport) की स्थापना के आधार पर साक्षात्कारकर्त्ता तथा साक्षात्कारदाता के बीच अपनेपन का संबंध स्थापित हो जाता है। संबंध (Rapport) के आधार पर साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कारदाता का विश्वास प्राप्त करना चाहता है। यह एक कला है। साक्षात्कार में संबंध (Rapport) की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण शर्त है। संबंध (Rapport) एक मनोवैज्ञानिक तकनीक है।

8. साक्षात्कार में 'प्रश्नों' का विशेष महत्त्व है। साक्षात्कारकर्त्ता साक्षात्कारदाता से 'प्रश्न' पूछता है। प्रश्नों के आधार पर तथ्यों तथा सूचनाओं का संकलन किया जाता है। साक्षात्कार में हर प्रश्न 'अध्ययन–विषय' के केन्द्रीय बिन्दु के साथ तर्कपूर्ण रूपों में जुड़ा होता है। यदि अनुसंधान का विषय 'प्रेम विवाह' से है तो हर प्रश्न प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्रेम विवाह के साथ तर्कपूर्ण रूपों में संबंधित होता है। यदि अध्ययन का विषय 'भूमंडलीकरण' से संबंधित है तो हर प्रश्न भूमंडलीकरण के साथ तर्कपूर्ण रूपों में संबंधित होता है। अश्लील, असंसदीय, संकीर्ण तथा जटिल प्रश्नों का उपयोग साक्षात्कार के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। स्पष्ट, तर्कपूर्ण, शालीन तथा तथ्य–अन्वेषण से संबंधित प्रश्नों के सहारे उत्तरदाता

के अंतर्मन के रहस्यों के संबंध में विश्वसनीय सूचनाओं का संकलन किया जा सकता है।

9. साक्षात्कार में अनुसूची (Schedule) तथा साक्षात्कार पथ–प्रदर्शिका (Interview-guide) आदि का उपयोग होता है। अनुसूची में अध्ययन–विषय से संबंधित प्रश्नों को क्रमबद्ध रूप में सम्मिलित किया जाता है। साक्षात्कार पथ–प्रदर्शिका में अध्ययन से संबंधित 'मुद्दों' को सम्मिलित किया जाता है। अध्ययन–विषय के अनुरूप साधारणतः अनौपचारिक साक्षात्कार में 'अनुसूची' अथवा 'साक्षात्कार पथ–प्रदर्शिका' का उपयोग नहीं किया जाता है। साक्षात्कारकर्त्ता प्रश्नों को पूछता है तथा अनुसूची अथवा साक्षात्कार पथ–प्रदर्शिका के बिना उत्तरदाताओं से तथ्यों का संकलन करता है। उल्लेखनीय है कि विशेष परिस्थिति में ही इस प्रकार के साक्षात्कार का आयोजन किया जाता है।
10. साक्षात्कार में उत्तर लिखने का काम साक्षात्कारकर्त्ता का होता है। साधारणतः साक्षात्कारकर्त्ता अनुसूची के आधार पर प्रश्न पूछता है तथा उत्तरदाता उत्तर देता है। प्राप्त उत्तरों को लिखने का काम साक्षात्कारकर्त्ता का होता है। उदाहरणस्वरूप क्रिकेट खिलाड़ी 'धोनी' से साक्षात्कारकर्त्ता है–'राँची'। साक्षात्कारकर्त्ता उत्तर को लिख लेता है–राँची। स्पष्ट है, उत्तर लिखने का काम साक्षात्कारकर्त्ता का होता है।
11. चूँकि साक्षात्कार में उत्तर लिखने का काम साक्षात्कारकर्त्ता का होता है, अतः साक्षात्कार में समाज के हर वर्ग से तथ्यों का संकलन किया जा सकता है।
12. चूँकि शक्षित–अशिक्षित समाज के हर वर्ग से तथ्यों का संकलन किया जा सकता है, अतः साक्षात्कार में सभी प्रकार के निदर्शन (Sample) को सम्मिलित किया जा सकता है।

13. साक्षात्कारकर्ता को अध्ययन–विषय, अध्ययन–क्षेत्र तथा साक्षात्कारदाता के व्यक्तिव के संबंध में अपेक्षित जानकारी होने चाहिए। उत्तरदाताओं की भाषा, संस्कृति तथा अन्य संबंधित पक्षों की पृष्ठभूमि की जानकारी के बिना साक्षात्कार का कोई विशेष अर्थ नहीं होता है।
14. चूँकि साक्षात्कार में साक्षात्कारदाता तथा साक्षात्कारकर्ता के बीच आमने–सामने का संबंध होता है, अतः साक्षात्कार के समय अवलोकन पद्धति (observation method) का भी लाभ प्राप्त हो जाता है। साक्षात्कार में प्राप्त तथ्यों की विश्वसनीयता की परख में इस प्रकार के अवलोकन का विशेष महत्त्व है। उदाहरणस्वरूप अमिताभ बच्चन के साथ साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कारकर्ता अवलोकन करता है कि ड्राइंगरूम में कविवर हरिवंशराय बच्चन के प्रति अपार आत्मीय श्रद्धा है।

साक्षात्कार के प्रकार (Types of Interview)

1. **सामूहिक साक्षात्कार** (Group Interview) – अनेक–उत्तरदाताओं से एक साथ सूचना संकलन हेतु सामूहिक साक्षात्कार का उपयोग किया जाता है। साधारणतः सामाजिक सर्वेक्षण में सामूहिक साक्षात्कार का विशेष महत्त्व है। सामूहिक समस्याओं की जानकारी हासिल करने हेतु सामूहिक साक्षात्कार एक महत्त्वपूर्ण प्रविधि है।
2. **व्यक्तिगत साक्षात्कार** (Individual Interview) – व्यक्तिगत साक्षात्कार में एक साक्षात्कारकर्ता तथा एक ही उत्तरदाता होता है। समूह में साक्षात्कार नहीं होता है। गोपन, विश्वसनीय एवं प्रामाणिक सूचनाओं के संकलन में व्यक्तिगत साक्षात्कार का विशेष महत्त्व है।
3. **निदानात्मक साक्षात्कार** (Diagnostic Interview) –समस्या के निराकरण हेतु निदानात्मक साक्षात्कार एक उपयोगी प्रविधि है। इसके

अंतर्गत समस्याओं की जानकारी प्राप्त की जाती है। साथ ही समस्या के समाधान के लिए भी उपयोगी सुझावों का संकलन किया जाता है।

4. **केंद्रित साक्षात्कार** (Focussed Interview) – इस विधि का सर्वप्रथम उपयोग **आर0के0 मर्टन** तथा उनके कुछ साथियों ने 1946 ई0 में किया। मर्टन के अनुसार जनसंचार के साधनों के समाज–मनोवैज्ञानिक प्रभावों को जानने के लिए यह एक उपयोगी साक्षात्कार है।
5. **गैर–निर्देशित साक्षात्कार** (Non-directive Interview) – गंभीर तथा जटिल समस्याओं के अध्ययन के लिए गैर–निर्देशित साक्षात्कार का उपयोग किया जाता है।। साक्षात्कार की इस प्रविधि में साधारणतः अनुसूची आदि का उपयोग नहीं होता है। साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाता के समक्ष प्रश्नों की झड़ी लगा देता है। पूरक प्रश्नों का भी उपयोग किया जाता है। सहज एवं खुले वातावरण में साक्षात्कार का आयोजन होता है।
6. **पुनरावृत्ति साक्षात्कार** (Repetitive Interview) – गंभीर एवं ज्वलंत समस्याओं के अध्ययन में साक्षात्कारदाता से बार–बार साक्षात्कार के द्वारा विश्वसनीय एवं प्रामाणिक सूचनाओं के संकलन हेतु पुनरावृत्ति साक्षात्कार का उपयोग होता है। उदाहरणस्वरूप अपराध वेश्यावृत्ति, मद्यपान तथा मूल्यांकन से संबंधित समस्याओं के अध्ययन में एक से अधिक बार साक्षात्कार के द्वारा उत्तरदाता से तथ्यों का संकलन किया जाता है।
7. **संरचित साक्षात्कार** (Structured Interview) – संरचित साक्षात्कार के निम्नलिखित पक्ष होते है।–(क) साक्षात्कार अनुसूची, (ख) पूर्व निश्चित स्थान, (ग) पूर्व निश्चित समय (घ) पूर्व निश्चित प्रश्न (ड) साक्षात्कारकर्ता को स्वतंत्रता नहीं (च) प्रश्नों की भाषा या मात्रा एवं क्रम

में हेर–फेर करने की इजाजत नहीं। संरचित साक्षात्कार बहुआयामी समस्याओं तथा विस्तृत अध्ययन क्षेत्रों से संबंधित सूचनाओं के संकलन में एक उपयोगी विधि है।

8. **असंरचित साक्षात्कार** (Unstructured Interview) – स्वतंत्र रूप में साक्षात्कारकर्ता बिना किसी प्रतिबंध के खुले एवं सहज वातावरण में असंरचित साक्षात्कार के माध्यम से विभिन्न प्रकार के तथ्यों का संकलन करता है।
9. **उपचारात्मक साक्षात्कार** (Treatment Interview) – तथ्यों तथा घटनाओं के विश्लेषण तथा गहन अध्ययन से संबंधित साक्षात्कार को उपचारात्मक साक्षात्कार कहते है।। अंतर्निहित तथ्यों के विश्ले ाण हेतु यह एक उपयोगी विधि है।

प्रश्न – 6 : साक्षात्कार प्रविधि का महत्त्व एवं सीमाओं को स्पष्ट करें।

साक्षात्कार प्रविधि का महत्त्व (Importance of Interview Method)

1. साक्षात्कार पद्धति के आधार पर समाज के सभी वर्गों के लोगों से तथ्यों का संकलन संभव है। चूँकि इसमें उत्तर लिखने का दायित्व स्वयं साक्षात्कारकर्ता पर होता है, अतः शिक्षित–अशिक्षित सभी प्रकार के व्यक्तियों से सूचनाओं का संकलन किया जा सकता है।
2. साक्षात्कार के जरिये तथ्यों के संकलन के समय अवलोकन का भी लाभ प्राप्त किया जा सकता है। चूँकि साक्षात्कार के समय साक्षात्कारकर्ता स्वयं मौजूद होता है, अतः वह उत्तरदाता से संबंधित परिवेश वातावरण तथा परिदृश्य का भी अध्ययन कर सकता है।
3. साक्षात्कार प्रविधि के आधार पर व्यक्तियों के विचारों भावनाओं तथा एहसासों से संबंधित तथ्यों को प्राप्त किया जा सकता है। विभिन्न

प्रश्नों के सहारे साक्षात्कारदाता से संबंधित मुद्दों के अनुरूप सूचनाओं का संकलन किया जा सकता है।

4. साक्षात्कार के माध्यम से अतीत की घटनाओं का अध्ययन किया जा सकता है। उत्तरदाताओं से अतीत की घटनाओं के संबंध में सूचनाओं का संकलन किया जा सकता है।
5. साक्षात्कार के आधार उपकल्पना के सत्यापन से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जा सकता है। उपकल्पनाओं के सत्यापन में साक्षात्कार एक महत्त्वपूर्ण पद्धति है।

साक्षात्कार प्रविधि की सीमाएँ (Limitations of Interview Method)

पी0वी0 यंग ने स्पष्ट किया है कि साक्षात्कार पद्धति की कुछ सीमाएँ है। साक्षात्कारकर्ता की योग्यता, कौशल तथा क्षमता पर साक्षात्कार की सफलता निर्भर है। साक्षात्कारदाता के साथ संबंध की स्थापना में यदि साक्षात्कारकर्ता सक्षम नहीं होता है तो साक्षात्कार की सफलता पर प्रश्नचिह्न खड़ा होता है। व्यक्तिगत पूर्वाग्रह तथा संकीर्णता से साक्षात्कारकर्ता मुक्त नहीं हो पाता है तो साक्षात्कार का कोई अर्थ नहीं होता।

सीमाओं के बावजूद, सामाजिक प्रघटनाओं तथा मानव व्यवहारों के अध्ययन में साक्षात्कार एक महत्त्वपूर्ण प्रविधि है। साक्षात्कार एक कला है, एक मनोवैज्ञानिक तकनीक है। अनुसंधानकर्ता के लिए यह प्रविधि एक चुनौती है। मनुष्य वज्र के समान कठोर भी होता है तथा फूल के समान कोमन भी होता है। साक्षात्कारकर्ता की क्षमता पर ही साक्षात्कार की सफलता निर्भर है।